Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

February-2022, Volume : 08, Issue : 09, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

चाणस्मातीर्थ भटेवापार्श्वनाथजी
के जिनालय का मनोरम
दृश्य (206वीं वर्षगांठ के विशेष उपलक्ष्य में)

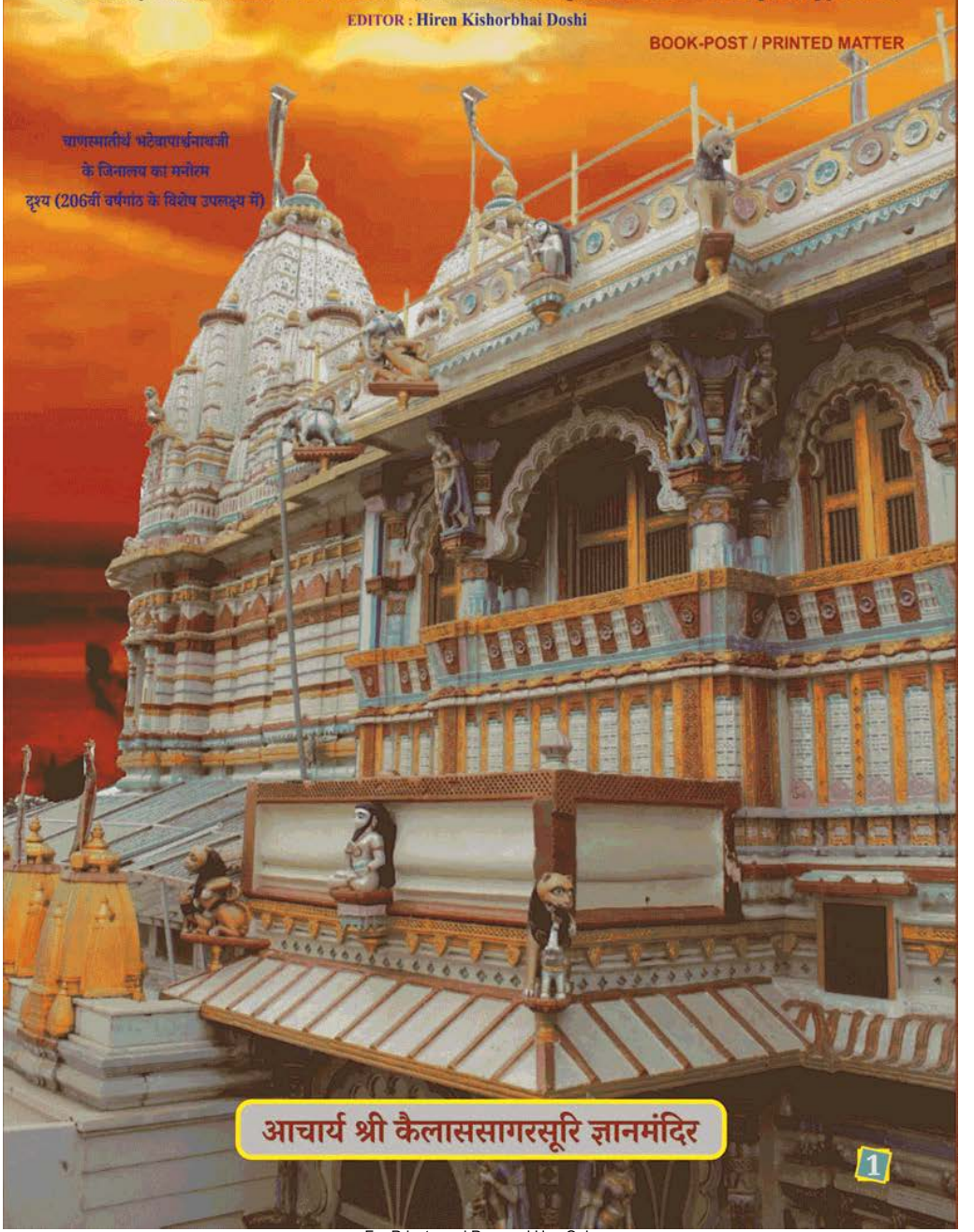

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

तपागच्छाधिपती प. पू. आ. श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा एवं राष्ट्रसंत प. पू. गुरुदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि की पावन निश्रा में मुमुक्षु श्री अजितकुमार की भव्यातिभव्य दीक्षा का मंगल दृश्य

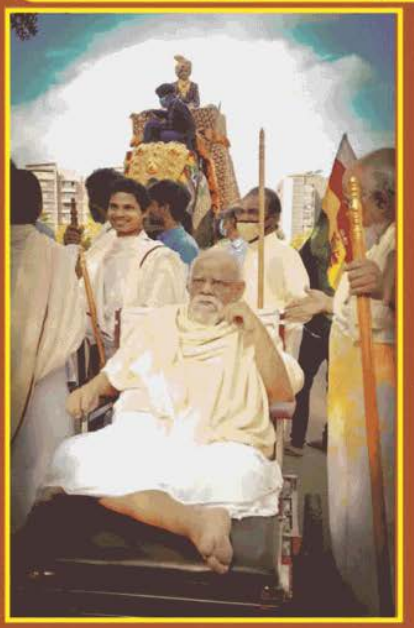

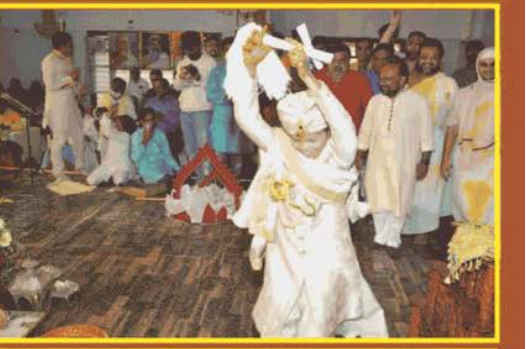

कोबातीर्थ - महावीरालय का 35वाँ ध्वजारोहण

शीलज अहमदाबाद में राष्ट्रसंत प. पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के आशिर्वाद ग्रहणार्थ पधारे गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-८, अंक-९, कुल अंक-९३, फरवरी-२०२२

Year-8, Issue-9, Total Issue-93, February-2022

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ फरवरी, २०२२, वि. सं. २०७८, माघ शुक्ल चतुर्दशी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	श्री गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	AcharyaPadmasagarsuri	९
५.	एकीभाव स्तोत्र सह-नागचंद्रसूरिकृता छाया(टीका)	मुनि वंदनरुचिविजय	१०
६.	भटेवातीर्थमंडन पार्श्वजिन स्तवन संग्रह	डिम्पलबेन एन. शाह	१४
७.	श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला-बनारस		२४
८.	पुस्तक समीक्षा	श्री गजेन्द्र शाह	२६
९.	समाचार सार		२८

विद्या बीखरती भली, वेहता भला निवांण ।

सूरता तो कहता भला, बैठा भला अजांण ॥९४॥

प्रत नं. १४९९५६

अनुवादः- विद्या का विस्तरण होना भला है, जैसे बहता पानी भला (अच्छा) होता है । बुद्धिमान बोलता भला और मूर्ख बैठा (चूप) भला है ।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

अंक में प्रस्तुत लेख- १. गुरुवाणी, २. Awakening, ३. एकीभाव स्तोत्र सह टीका (अप्रगट टीका), ४. भटेवातीर्थमंडन पार्श्वजिन स्तवन संग्रह (५ अप्रगट कृतियाँ), ५ . श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला-बनारस (पुनर्प्रकाशन लेख), ६. श्री उत्तराध्ययनसूत्र कथा (पुस्तक समीक्षा.) ये ६ लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनमें ६ अप्रगट कृतियाँ प्रकाशित की जा रही है।

१. गुरुवाणी- महा शुक्ल चतुर्दशी के दिन कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यजी का दीक्षादिन है, इस प्रसंग पर हमने हेमचंद्रसूरि के बारे में योगनिष्ठश्री के उद्गार (उनके ही द्वारा प्रकाशित पुस्तक- धार्मिक गद्य संग्रह भा. १ में से) प्रकाशित किये हैं। इसमें हेमचंद्राचार्य का जैनधर्म को राजधर्म बनाने में योगदान, सर्वविषयों की निपुणता की बात, शासनप्रभावक महापुरुषों की अनुमोदना व वर्तमान में ऐसा प्रयास करने वाले महात्माओं को मदद व प्रोत्साहन देने की बातें उल्लेखनीय है।

२. Awakening- यह लेख राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पावन प्रवचन की किताब **Awakening** से क्रमशः प्रकाशित किया गया है। इसमें सत्संग की महिमा दर्शाई गई है।

३. एकीभाव स्तोत्र सह टीका- वादिराज मुनि रचित एकीभाव स्तोत्र व उसके ऊपर नागचंद्रसूरि रचित (अप्रगट) टीका का संपादन मुनि श्री वंदनरुचिविजयजी म.सा. द्वारा किया गया है। यह लेख गतांक से क्रमशः प्रकाशित किया गया है और इस अंक में संपूर्ण कर दीया गया है।

४. भटेवातीर्थमंडन पार्श्वजिन स्तवन संग्रह- फाल्गुन शुक्ल ३ के दिन भटेवा पार्श्वनाथ जिनालय की २०६वीं वर्षगांठ का प्रसंग आने पर इस तीर्थ पर रचे गये अप्रगट भिन्न-भिन्नकर्तृक ५ स्तवनों को प्रकाशित किया गया है। इसका संपादन आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर अहमदाबाद शहर शाखा की कार्यकर्त्री श्रीमती डिम्पलबेन एन. शाह द्वारा किया गया है। इसमें ऐतिहासिक प्राचीन तीर्थ चाणस्मा में बिराजमान भटेवापार्श्वनाथजी की महिमा का गान किया गया है। प्रस्तुत ५ स्तवनों में प्रभुभक्ति के साथ कई रोचक व ऐतिहासिक तथ्य भी प्राप्त होते हैं।

५. श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला, बनारस- पुनः प्रकाशन स्तंभ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्तर्गत यह लेख गतांक से क्रमशः प्रकाशित किया गया है और इस अंक में इसे संपूर्ण कर दिया गया है। इस लेख का लेखन पाठशाला नामकरण के दो वर्ष बाद लिखा होने से पिछले दो वर्ष की स्थिति का वर्णन व आगे किये जाने वाले कार्यों का विवरण दर्शाया गया है। श्रावकों के दृढिकरण की बात, समयोचित इंग्लिश शिक्षण, देश-विदेश में धर्मप्रचारक तैयार करना, आदि बातें महत्वपूर्ण है।

६. श्री उत्तराध्ययनसूत्र कथा (पुस्तक समीक्षा स्तंभ)- श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमंदिर, सुरत द्वारा प्रकाशित, पं. सिद्धचन्द्रविजयजी द्वारा संपादित पुस्तक- 'श्री उत्तराध्ययनसूत्र कथा' की समीक्षा प्रकाशित की गई है। इसमें वादीवेताल शांतिसूरि रचित शिष्यहिता टीका में रही प्राकृत कथाओं पर से पद्मसागर गणि द्वारा संस्कृत में तैयार की गई कथाओं तथा उसका गुजराती अनुवाद चित्रों सहित किस प्रकार प्रकाशित किया गया है उसकी विशेषताएँ कोबा ज्ञानमंदिर के पंडित श्री गजेंद्र शाह द्वारा प्रस्तुत की गई हैं।

प्रस्तुत अंक की सामग्री शोधार्थी, आत्मार्थी वाचकों के लिए उपयोगी बनेगी यही मंगल कामना के साथ...।

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पेज नं. ३४ पर से)

दि. 23-02-2022 को प.पू. राष्ट्रसंतश्री आदि गुरुभगवंतों का सामैया, प्रातः 9 बजे स्नात्र महोत्सव, संक्षिप्त पाटला पूजन तथा श्री ऋषभदेव श्वे.मू.पू. संघ के बहनों द्वारा महेंदी रस्म की जायेगी। शाम को 4.30 बजे यात्रिकों को उत्तरपारणां एवं 6 बजे यात्रिकों को कीट वितरण किया जायेगा। तीर्थयात्रा प्रयाण दि.24 फरवरी 2022 को सुबह 5.30 बजे होगा, जिसका विहार क्रम- दि.24 फरवरी – ओगणज, 25 – मोटी भोयण, 26 – करणनगर रोड, 27 – सादरा, सर्वोदय आश्रम, 28 – मद्रीसणा, 1 मार्च – रांतेज, 2 – फींचडी, 3 – मंकोडीया, 4 – श्री शंखेश्वरतीर्थ प्रवेश, तथा 5 मार्च सुबह 8.30 बजे संघमाल किया जायेगा। संघ दरमियान श्रीसौमिल शाह (अमदावाद), श्रीकेतनभाई डेढिटा(मुंबई), श्री विपुलभाई जैन (पाली-राज.) आदि नामी-अनामी संगीतकार द्वारा भक्तिगान किया जायेगा। इस पुण्यप्रभावी यात्रा में सम्मिलित होने का स्नेहभरा आमंत्रण संघ द्वारा दिया गया। इस पावनकारी अवसर पर अंदाजित 28 जितने लाभार्थी संघपति परिवार ने लाभ लिया है जिनकी भूरि भूरि अनुमोदना...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री शेठ मोतीशा रीलीजीयन्स एन्ड चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई.
- भरूच जैन श्वे.मू.पू. विशापोरवाड मारवाडी संघ, वेजलपुर, भरूच.
- श्री एस.वी.लाठीया, साकीनाका, मुंबई.
- श्री जैन श्वे. नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर, जि.बाडमेर, राज.
- श्री ऋषभदेव श्वे.मू.पू. जैन संघ, मीराम्बीका, नारणपुरा, अमदावाद.
- श्री पुष्पदंत श्वे.मू.पू. जैन संघ, सेटेलाईट रोड, अमदावाद.
- श्री महावीर जैन श्वे.मू.पू. संघ, पालडी, अमदावाद.
- श्री जैन श्वे.मू.पू. संघ, हिराभवन, शाहुपुरी, कोल्हापुर.
- श्रो जैन श्वे.मू.पू. मंदिर, गांधीनगर, बेंग्लोर.
- अमदावाद खतरगच्छ ट्रस्ट, नवरंगपुरा, अमदावाद.

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

जैनधर्मने राजधर्म बनावनार आ. हेमचंद्रसूरि

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

संवत् १९६८ ना माघ सुदि ४ मंगळवार ता. २३-१-१९१२. बीलीमोरा.

जैनधर्मने राजकीयधर्म बनाववाने कलिकालसर्वज्ञ श्रीमद् हेमचंद्राचार्ये मन वाणी अने कायाथी अत्यन्त महेनत करी हती। जैनधर्मना उद्धार माटे तेमणे कुमारपाळराजाने जैन बनाव्यो अने तेओश्रीए जैनधर्मना प्रचार माटे अने जैनग्रंथो रचवा माटे अत्यंत प्रयत्न कर्यो छे। तेमनी पाछळ तेमना जेवा मुनिवरो न पाकवाथी तेमज भाविभाव योगे जैनधर्मपाळनाराओनी संकुचितता थवा लागी। श्रीमद् हेमचंद्रे ते कालने अनुसरीने जे पगलां भर्यां हतां ते करोडो घणां उत्तम हतां।

जैनोना महा उपकारी एवा श्रीमद् हेमचंद्र जेवा हजारो मुनिवरो उत्पन्न थाओ! धर्मराज्यना प्रवर्तक अने फीलसुफ एवा श्रीमद् हेमचंद्रना हृदयनुं धर्माभिमान विचारीए छीए तो एटलुं मालूम पडे छे के तेओ जैनधर्मना प्रचारक आत्मभोगी पुरूषमां प्रथम नंबरे मूकवा योग्य आज सुधीना आचार्यमां ते हता। मंत्रशास्त्र, योगशास्त्र, व्याकरण, न्याय सिद्धांत, तंत्र, ज्योतिष वगेरे अनेक बाबतोमां तेओ निपुण हता। तेमना जेवा आत्माओ प्रकटी नीकळो ! जैन गुरूकुल वगेरेनी स्थापनाथी उत्तम जैनधर्म प्रचारक पुरूषो प्रकटी नीकळशे, एवी आशा रहे छे।

जैनधर्म माटे आत्मभोग आपनारा साक्षर मुनिवरोने वधावी लेवा जोइए। पूर्वाचार्योनां कृत्योनी अनुमोदना करवी जोइए। तेमज सांप्रतकालमां जे जे मुनिवरो जैनधर्मना उदय माटे आत्मभोग आपी जे प्रयत्न करता होय तेओने मदद करवी जोइए अने तेओनो उत्साह वधे एम उदारचित्तथी वर्तवुं जोइए। उत्तम मुनिवरोनां चरित्रो हृदयमां उंडी असर करे छे।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग - १, पृष्ठ -१९५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

The shells that roll with the waters of the Narmada river become conch shells and the stones become saligrams (holy stones that are worshipped by Hindus as embodiments of God). Just as a way-farer obtains rest in the shadow of a huge tree in summer; and just as a thirsty man quenches his thirst at a cataract, one who has thirst for knowledge, satisfies that thirst in the company of the enlightened. Those who seek salvation obtain it by staying in the company of noble and saintly persons. Even wicked people like Arjunamali Drudaprahari and Chanda Kaushika obtained peace and spiritual elevation through noble company. The reason for their attainment of salvation is nothing but their noble company. Santh Sundar Dasji says that it is difficult to get the company of noble and saintly persons.

The poet Sundar says, "Brothers, in this world we can get parents, children, brothers and sisters; we can get youthful damsels who can give us joy. We can get kingdoms, elephants, horses, happiness, decorations and all that we desire to get. We can secure this world, the heavenly world, the Brahma Lokha and the Vaikunta. But it is very difficult to get the company of holy, noble and saintly persons".

The sinners endeavour to attain self-purification and sanctity by means of the company of noble and saintly people.

(continue)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवादिराजमुनिकृत

एकीभाव स्तोत्र सह नागचंद्रसूरिकृता छाया(टीका)

मुनि वंदनरुचिविजय

(गतांक से आगे..)

[मूल] प्रत्युपन्ना नयहिमगिरेरायता चामृताब्धे-
र्या देव ! त्वत्पदकमलयोः, सङ्गता भक्तिगङ्गा ।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः,
कल्माषं यद् भवति किमियं, देव! सन्देहभूमिः ॥१६॥

[छाया] भो **देव ! नयहिमगिरे** जीवादितत्त्वानामनेकान्तात्मकत्वप्रतिपादकसदादिनय- प्रमाणसप्तभङ्गीस्वरूपस्याद्वादनयातुलगिरेः **प्रत्युत्पन्ना त्वत्पदकमलयोः सङ्गता अमृताब्धेरायता** क्षीरसागरपर्यन्तं व्याप्ता पक्षे मोक्षपदवीपर्यन्तं अनुस्यूत्त या **भक्तिगङ्गा**ऽस्ति। **तस्यां मम चेतो रुचिवशादाप्लुतं** निमग्नं **क्षालितांहः कल्माषं भवती**ति **यत्** भो **देव। इयं संन्देहभूमिः किं** सकलकर्मविप्रमुक्त पर स वीतरागपदकमलजातभक्तितीर्थमेव सकलकर्ममलविश्लेषाय परमानन्दावबोधवीर्यदृगादिनिजगुणग्रामलब्धाय च कारणं भवतीति तात्पर्यम्॥१६॥

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुखं, त्वामनुध्यायतो मे,
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्प[६] ।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते, तृप्तिमभ्रेषरूपां,
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद् भवन्ति ॥१७॥

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुखं प्रकटीभूतनित्यनिर्मलातीन्द्रियसुखं **त्वामनुध्यायतो मे**- भवन्तं अश्रान्तस्मरतो मम **त्वतंय्येवाऽहं स इति** कृतकृत्यस्त्वमेवाऽहमित्यन्तरात्मा भवामीति **निर्विकल्पा** सोऽहमित्यभेद**मति**र्मनीषा जायते इयं **मिथ्यैवेयं** रजनमनप्रतीताऽपि नैगमनयाऽपेक्षया **तदपि** फलं सत्यमेव तत्कथ**मभ्रेषरूपां तृप्तिं तनुते** अचलानन्दं कुरुतेऽभ्रेषो भ्रंशो यथोचितादित्युक्तत्वात् भ्रेषश्चलनात्मा तदितरः स्थित**दोषात्मनोऽपि त्वत्प्रसादाद्भिमतफला भवन्ती**ति सुगमं तत्परमात्मस्वरूपमात्मनि भावयतः पिंडस्थध्यानमभिष्टपुष्टिकृत् भवतीति भावः॥१७॥

---

६. निर्विकल्पं. M,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिथ्यावादमलमपनुदन्[७], सप्तभङ्गीतरङ्गै-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं, देव! पर्येति यस्ते ।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाऽचलेन,
व्यातन्वन्तः सुचिरममृतासेवया तृप्नुवन्ति ॥१८॥

भो **देव ! यस्ते वागम्भोधि**स्तव मृदुमधुरगम्भीरदिव्यध्वनिक्षीरवारिराशिः **सप्तभङ्गीतरङ्गैर्मिथ्यावाऽलं अपनुदन्नखिलं**- तु **भुवनं पर्येति** व्याप्नोति **तस्यावृत्तिं** तस्य क्षीरो**दस्य** मथनं **चेतसैवाचलेन** मनोमन्दिरगिरिणा **व्यातन्वन्तो विबुधाः** सम्यक्ज्ञानिनः सुराश्च **सुचिरममृत्तसेवया** नित्यं मोक्षसुखास्वादनेन **तृप्नुवन्ति** तृप्तिं गच्छन्ति । वीतरागप रमेश्वरप्रणीतानुयोगचतुष्टयागमामृतोपयोग एव निजस्वरूपोपलब्धये अजरामरप्राप्तये च कारणं भवतीति तात्पर्यम् ॥१८॥

आहार्येभ्यः स्पृह्यति परो, यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्रग्राही भवति सततं, वैरिणां यश्च शक्यः ।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषावसनकुसुमैः, किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ॥१९॥

भो **देव ! स्वभावाद हृद्यः परो यः** सहजसौन्दर्यसुरभिसुचित्वसौभाग्यविरहितः दोषाक्रान्तस्त्वदन्यः स **आहार्य्येभ्यः स्पृह्यति** वस्त्राभरणलेपनाहारादिसुखसाधनानि कामयते। **वैरिणां यश्च शक्यः** स **शस्त्रग्राही भवति । त्वं सर्वाङ्गेषु सुभगोऽसि। त्वं परेषामशक्यो** यतस्तस्मात् भूषादसनकुसुमैः किं **उदस्त्रैः शस्त्रैः** कोशाद् उत्खाताद् उक्षिप्तैर्निशितायुधैः किञ्च प्रयोजनं नास्तीत्यर्थः निराभरणभासुरेत्यादिस्तुतिविषयस हजसौन्दर्यादिगुणविशिष्टो वीतराग एव मुमुक्षाणामाराध्यो भवतीति तात्पर्यम् ॥१९॥

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां, किं तया श्लाघनं[८] ते,
तस्यैवेयं भवलयकरी, श्लाघ्यतामातनोति ।
त्वं निस्तारी जननजलधेः, सिद्धिकान्तापतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम् ॥२०॥

भो देव ! **तव सेवामिन्द्रः** सुतरी(रां?)**कुरुताम्। तया** सेवया ते तव **श्लाघनं किं तस्यैव** मघोन **एव** भवविनाशकारिणी सेवा **श्लाघ्यताम् आतनोति। त्वं निस्तारी जननजलधेः** संसारादुत्तारकस्त्वमेव तथा **सिद्धिकान्तापति**र्मोक्षलक्ष्मीकान्त**स्त्वं त्वं लोकानां प्रभुरिति** त्वं **तव स्तोत्रं श्लाघ्यते**। अर्हद्भट्टारकस्य स्तव-नयजनादिभिरुपास्ति

७. मनुपनुदन्. H, ८. श्लाघानं. H,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुर्वतः स्वस्यैवोपकारं कृतवानिति भावः ॥२०॥

वृत्तिर्वाचामपरसदृशी, न त्वमन्येन तुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी न क्रमन्ते ।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टा-
स्ते भव्यानामभिमतफलाः, पारिजाता भवन्ति ॥२१॥

भो देव ! तव **वृत्तिर्वाचां** गद्यपद्यचूर्णिकादिस्तुतिविषयाणां वाचां शब्दरूपतयाऽ**परसदृशी** देवाभास समस्तकनामत्वं त्वदन्ये न समानो भवसि **अमी नः स्तुत्युद्गारा** एते अस्माकं स्तोत्रभाषा**स्ततस्तस्मात् कथमिव त्वयि क्रमन्ते । मैवं भूवन्**[९] एवं मा भूवन् **तदपि** तथापि **भगवद्भक्तिपीयूषपुष्टास्ते** स्तुत्युद्गारा **भव्यानामभिमतफला** अभीष्टफलप्रदाः **पारिजाताः** कल्पवृक्षा **भवन्ति** अनन्तगुणरत्नाकरमर्हन्तं स्वकीयमतनुगुणेन रूपादिस्तवं तत्त्वन्ते भव्यजनाः स्वेष्टफलं प्राप्नुवन्तीत्यभिप्रायः ॥२१॥

कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव ! प्रसादो,
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवाऽनपेक्षम् ।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं, सन्निधिः वैरहारी,
क्वैवंभूतं[९] भुवनतिलक ! प्राभवं त्वत्परेषु ॥२२॥

भो **भुवनतिलक देव ! तव** भवतः **कोपावेशाद् क्वापि न** कुत्रापि न हि तद् क्वापि **प्रसादो न तव चेतोऽनपेक्षं परमोपेक्षयैव व्याप्तं तदपि भुवनं** सचराचरं जगद् **ते** तव **आज्ञाधीनं** तव **सन्निधिः** सामीप्यं **वैरहारी एवंभूतं प्राभवं त्वत्परेषु** त्वदन्येषु **क्व** कुत्रास्ति। जिनेश्वरस्य महिमाऽन्येषाम् असम्भवति इति अभिप्रायः ॥२२॥

देव ! स्तोतुं त्रिदिवगणिकामण्डलीगीतकीर्ति,
तोतूर्ति त्वां सकलविषया[१०] ज्ञानमूर्ति जनो यः ।
तस्य क्षेमं न पदमटतो, जातु जोहूर्ति पन्था-
स्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषये, नैष मोमूर्ति मर्त्यः ॥२३॥

भो देव ! **त्रिदिवगणिकास्व**र्वेश्या**मण्डलीगीतकीर्ति सकलविषयाज्ञानमूर्ति त्वां स्तोतुं यो जन तोतूर्ति** पुनः त्वरयति सम्भ्रमं चक्रायते **क्षेमं पदं** मोक्षस्थान-**मटतो गच्छतस्तस्य पन्थाः जातु** सकृत् **न जोहूर्ति** भृशं न मूर्च्छति, **तत्त्वग्रन्थस्मरणविषये मर्त्यः न मोमूर्ति** भृशं न मूर्च्छति। न मुह्यति परमात्मनस्तोत्रमशक्तोऽपि स्तुत्यभिलाषमात्रेण मोक्षमधिगच्छति इति भावः ॥२३॥

---

९. भूवं. H, १०. या. H,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्ते कुर्वन्निरवधिसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपं,
देव ! त्वां यः समयनियमादादरेण स्तवीति ।
श्रेयोमार्गं स खलु सुकृती, तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः, पञ्चधा पञ्चितानां ॥२४॥

भो देव ! निखिलसुख**सुकृती**पुण्यात्मा **खलु** नियमेन **तावता श्रेयोमार्गं पूरयित्वा पञ्चधा** पञ्चितानां **कल्याणानां विषयो भवति**। जिनस्वामिनं ध्यात्वा स्त**ववत्** तीर्थङ्करपुण्यात्माश्रयेन पुण्यातिशयेन पञ्चकल्याणकभाग् भवती**त्यर्थः** ॥२४॥

भक्तिप्रह्विमहेन्द्रपूजितपद ! त्वत्कीर्ति[११] र्तन क्षमाः,
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि संयमभृतः, के हन्त मन्दा वयम् ।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते,
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः, कल्याणकल्पद्रुमः ॥२५॥

भो देव ! **भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद !** भक्त्यातिशयेन नम्रसुरेन्द्राद्यर्चितपद ! त्वत्कीर्तने **सूक्ष्मज्ञानिनो** योगिनोऽपि **क्षमाः न** समर्थाः । अत्र मन्दा जडात्मानो **वयं हन्त** इति खेदे के किमात्राः **अस्माभिः स्तवनच्छलेन** स्तुतिमिषान्तरेण **तु परस्त्वयि** भवति **आदरस्तन्यते** क्रियते **स्वात्माधीनसुखैषिणां नः** अस्माकं **स** आदरः **कल्याणकल्पद्रुमः** शुभपरंपरैव अनेन श्लोकेन इदमुक्तं भवति ।

भो!सुरासुरार्चितचरणकमलजिनाधीशतवाननाऽन्तचतुष्टय!द्यपरिमितगुणमणीन् संसाराहिविषापहारचरणान् ब्रह्मर्द्धिसम्पन्ना गणधरदेवादयोऽपि कीर्त्तयितुं अशक्ताः । किं पुनरस्मदादयस्तर्हि स्तुतिरेव न घटते तथापि त्वां स्तोतुमशक्तानामप्यस्माकं स्तोत्रपात्रे त्वय्यादरः भक्तिरेव कल्याणकल्पद्रुमः पञ्चकल्याणलक्षणवस्तुसंप्रदाने साक्षात् कल्पवृक्षो भवतीति तात्पर्यम् ॥२५॥

इदमनवद्यकर्णाटविप्रकुलोतंसपार्श्वनाथोगुमटांबातनुझपरवादिमदभञ्जननागचन्द्रसूरिविरचितमेकीभावस्तोत्र-व्याख्यानमाकल्पं जयतादिति भद्दं ॥

अर्थ- आ निर्दोष कन्नडदेशीय ब्राह्मणकुलमां थयेला पिता पार्श्वनाथ माता गुमटाना पुत्र परवादीमदभंजन नागचंद्रसूरि रचित एकीभाव स्तोत्र व्याख्यान जय पामे ।

११. कीर्तन. M.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भटेवातीर्थमंडन पार्श्वजिन स्तवन संग्रह

डिम्पलबेन एन. शाह

प्रस्तावना - उत्तर गुजरातना महेसाणाथी ३० की.मी. ना अंतरे चाणस्मा गाम आवेलुं छे। गाममां श्री भटेवा पार्श्वनाथ जिनालय छे। कहेवाय छे के श्री भटेवा पार्श्वजिननी मनोरम्य प्रतिमा आ अवसर्पिणी काळना एकवीसमां तीर्थंकर श्री नमिजिनना समयनी छे, त्यारबाद ते मनुष्यलोकमां विविध स्थानोमां तेमज देवलोकमां पण पूजायेली छे।

चाणस्मा गामनो प्राचीनतम उल्लेख श्री वीशा श्रीमाणी ज्ञातिनी एक वहीमां **'वि. सं.१३३५** मां चाहणसमि' रूपे मळे छे। तेमज श्री भटेवा पार्श्वप्रभुना स्तवनादिमां पाटण नजीक रहेली चंद्रावती(चाणस्मा) नां सुरचंद शेठे विशाळ जिनालय बंधावी **'वि.सं.१५३५ ना वैशाख सुद ३'** ना मंगलदिने धामधूमपूर्वक प्रभुजीने प्रतिष्ठित कर्यानुं वर्णन छे। उपलब्ध प्रमाणोना आधारे चौदमी सदी जेटला प्राचीन श्री भटेवा पार्श्वजिन सोळमी सदीना पूर्वार्द्धमां बिराजमान थया। प्राप्त इतिहासने आधारे श्री भटेवा पार्श्वजिनना प्राचीनतम बिंब साथे चाणस्मानो संबंध ७५३ वर्ष जुनो छे।

सं.१८५४ नी सालमां नवा दहेरासरनो पायो नंखायो, जेना पथ्थर धांगध्रा मुकामे घडाई गाडांमां उत्साहवंत आवता हता। ते नूतन जिनालयमां सं.१८७२ ना फागण सुद त्रीजना रोज श्री भटेवा पार्श्वजिननी प्रतिमाने प्रतिष्ठित करवामां आवी। हाल ते नूतन जिनालय छे।

सं.१८९९ मागशर वद त्रीज मंगळवारना रोज माणेकचंदनी शिष्य परंपराए विबुधना शिष्य फतेचंद (पूनमियागच्छ) कृत श्री भटेवा पार्श्वजिन लावणीनो संदर्भ -

संवत अढार बहोतरे बेसाड्या, फागण सुद त्रीज शनिवारे।

..... महाजन चंद्रावती केरु, उच्छव कर्यो अति अतवारे॥ ज.... १८

(चाणस्मा(उ.गु.) मंडन श्री भटेवा पार्श्व जिनालय सार्द्धशताब्दी महोत्सव स्मारक ग्रंथ, सं.२०२४)

फागण सुद त्रीजना दिवसे जिनालयनी सालगिरी अतिउल्लासभेर उजववामां आवे छे। वर्तमान वर्षे जिनालयनी २०६ मी सालगिराह छे। वेळु(रेती)-माटीमांथी बनेली पार्श्वजिननी प्राचीन प्रतिमा नानी होवा छतां आकर्षक, अलौकिक, आह्लादक, नयनरम्य अने शांति अर्पनार छे। चाणस्मा गाम खूब ज भव्य धार्मिक समृद्धिवाळुं श्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भटेवादादाना प्रतापे जुदुं ज तरी आवे छे।

(१) अज्ञातकर्तृक

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवातीर्थ

कृति परिचय

अज्ञातकर्तृक आ स्तवनना प्रारंभे श्री पार्श्वजिनना माता-पिता, पत्नी अने जन्मस्थळनो परिचय आपी कर्ताए कृतिनी शरूआत करी छे। पार्श्वनाथ भगवाननी स्तवना करवाथी सुख-समृद्धि तेमज निरोगी काया प्राप्त थाय छे। दुख-दर्द, पाप सघळां नासी जाय छे। चातक जेम वर्षाने झंखे छे तेम परमतारक परमेश्वर श्री भटेवा पार्श्वजिननी कृपावृष्टि अमारा पर वरसती रहे। भगवाननो प्रभाव पृथ्वी पर दरेक स्थाने वखाणाय छे एवुं सहु जाणीने एमनी स्तुति करे छे एनुं कल्याण अने वाणीनी शुद्धि थाय छे।

प्रत परिचय

श्री नीतिविजयजी श्री अमरशाला ज्ञानभंडार- खंभात टेकरी पोथी नं.०३६७ नी प्रत नं.३०९४ मां पेटांक नं-२ पत्रांक-२आ-३अ पर भटेवा पार्श्वनाथ स्तवन आवेल छे। पार्श्व व मध्यफुल्लिकायुक्त प्रतना अक्षर सुवाच्य छे, अंकस्थान चिह्नयुक्त तेमज गाथा अलग दर्शाववा माटे लाल दंड कर्या छे।

॥९०॥ *॥ राग - रामगिरि ॥*

भलइं भेट्या भटेवउ पासजी, भयभंजन पूरण आसजी।
मनमोहन दरसन खासजी, जसु वदनं चंद्र प्रकासजी ॥१॥

पूजउ पासजी भटेवउ पासजी...आंकणी

नर-नारी सेवइ जासुजी[१], सुख संपति दीइ तासजी।
जसु चरणइ हरिनउ वासजी, सांमी हूं छूं तमचउ दासजी ॥२॥ पूजउ०...

वाणारासीमां अवतारजी, अश्वसेन केरउ कुंमारजी।
वामाराणीनउ महलारजी, प्रभावती तणउ भरतारजी ॥३॥ पूजउ०...

कमठ शठ गंजी[२] मांनजी, चित्रीत देखी नेमि जानजी।
संजम लीइ देई दानजी, प्रभु पांम्या पंचमन्यानजी ॥४॥ पूजउ०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पास नामइ नीरोगी कायजी, पास पूज्यइ पाप पुलाइजी[३]।
पास भेट्यइ भावठि जायजी, पास दीठइ दोलति थायजी ॥५॥ पूजउ०...

मेघ चाहइ चातक मोराजी, चंद्रमाकूं चाहइ चकोराजी।
धेनुं जिम चाहइ छोराजी, चाहू पदपंकज तोराजी ॥६॥ पूजउ०...

पास परतानूं वखाणजी, मही मंडलमां ठाण ठाणजी।
जाणइ ते सहूइ जाणजी, मुखशोधन नइ कल्याणजी ॥७॥ पूजउ०...

॥ इति भटेवा पार्श्व स्तवनं ॥

(२) भक्तिविजय मुनि कृत

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवातीर्थ

कृति परिचय

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवा कृतिना कर्ता नयविजय पं. ना शिष्य भक्तिविजय मुनि छे। सरस्वती माता अने विघ्नहर्ता गणपतिने प्रणाम करी कर्ताए अश्वसेन राजाना कुळमां अवतरेला, वामादेवीनी आंखनी कीकी एवा श्री पार्श्वजिनना दर्शन करवा हैयाना भाव व्यक्त करती स्तवना रची छे।

चाणस्मा तालुकाना चोगानमांथी नाथा पूजारी साथे भटेवा पार्श्वजिननी प्रतिमा आनंदोल्लासपूर्वक पाटणना चोकमां पधारी। फागण सुद सातमना दिने महेताना पाडामां शेठ रतनजीना घरे प्रभुनी पधरामणी थई। फतेचंद शेठे उत्सवमां धननी वर्षा करी प्रभुजीने वधाव्या। झेवरशाहे नृत्य समारंभ, नाटक करी प्रभुभक्ति करी, जेमां मोतीशाहे द्रव्य वापर्यानुं वर्णन प्राप्त थाय छे।

प्रभुजीना मनोहर मूर्तिनी वर्णन करता कहे छे- प्रभुना मस्तके हीराजडित मुगट, काने कुंडल, बन्ने हाथे बाजुबंध तेमज कांडे हीराजडित कडली सहित हाथमां बीजोरुं शोभायमान छे। केडे घुघरीयुक्त सोनानो कंदोरो आकर्षक छे। सोळे कळाए खीलेला पूनमना चंद्र जेवुं प्रभुजीनुं मुख मलके छे। जाई-जूई, चंपो, केवडो, गुलाब अने डमराना फूलनी महेकथी तेमज चारेबाजु दीवाओनी झगमगाटथी वातावरण प्रफुल्लित अने प्रकाशमय बन्युं छे। प्रभुजीनी गुण स्तवना करी कर्ताए तेमना स्मरण थकी ज सुखप्राप्ति थाय छे तेम जणावी अंते प्रभुजीनो जय-जयकार कर्यो छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिना कर्ता नयविजयजीना शिष्य भक्तिविजयजी छे। कर्तानो समय तेमनी अन्य रचनाओना आधारे वि.सं. १८२४ थी १८७३नी आसपासनो जणाय छे। कर्तानी विशेष विगत श्रुतसागर वर्ष ६, अंक ९, फेब्रुआरी, ई.स. २०२० पेज २३ थी २४मां तेमनी अन्य कृति पुद्गलपरावर्तन स्तवन साथे छपाई गयेल छे, त्यांथी जोई लेवो।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक-१३१७३७ मां पत्रांक-१आ पर पेटांक-२ पार्श्वजिन स्तवन-भटेवा छे। प्रतिलेखकनी कोई माहिती नथी। प्रतिलेखक द्वारा गाथा क्रमांक आपवामां भूल थयेल छे। कुल-१० गाथामां वर्णवायेला आ स्तवनमां घणी अशुद्धता रही जवा पामी छे, प्रतिलेखके कारण वगरना अनुस्वार लख्या छे तेमज छट्ठी गाथा छूटी जवाथी छेल्ले लखी छे। जे अमे सुधारीने दर्शाववानो प्रयत्न कर्यो छे।

सर(स)ती मातानिं वेंनें(विन)वुं, कांई गणपतें लागु पायें।
असूस्से(श्वसे)ननें कुलिं अवतेंर्या, तारी[४] वृ(वा)मा मातें कंलाहें[५](?)।

भटेवा पासजी, मनिं दर्सन देजोजी ॥१॥
गाम चांणसमोंथी चांचेर्या[६], कांई गोठी[७] नाथाने साथे।
आव्या पाटण गामना चोकमां, कांइं असरण केरा नाथ ॥२॥ भटेवा...
आव्या मेंताना पाडा पोलेमां, कांइं सेठ रतनजीनें घ्येरे।
फतेसांइं आली वधामणी, एणे आली छें धननी मेंहर ॥३॥ भटेवा...
झेंव्येरसा नाटक करें, मोतीसा ते खरचे छें द्रव्य।
सेठ फते ओछव करे, इंम करणी भवीनी भव्यें ॥४॥ भटेवा...
मूस्तक मुंगट हीर्ये झ[ज]ड्या, कांइं कांने कुंडल सार।
बांइं बाजुबंध बेहरेखा, मूख पूनमचंद बनाव ॥५॥ भटेवा...
हाथे ते कडली हीर्ये ड(ज)डी, कांइं सफल बीजोरुं हाथें।
केंहेंड कंदोरा हेंमना, कांइं घुघरीए झुंमकार ॥६॥ भटेवा...
जाइ जूइनें मोगरामांहिं, सोभें ग(गु)लाबनां फूल।
चंपक[८] जाइ निं केवडोमांहिं, दंमणो[९] फूल अमूल ॥७॥ भटेवा...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छत्रभेदी पूजा रचें कांइ, नत्य नीत्य नाटक थाइं।
दीन-द(दी)न पुंजा अवनवी, इंम करतां पात्येक जाइं ॥८॥ भटेवा...

फागुण सूद द(दि)न सात्यें(त)मिं, कांइं आव्या छिं पास जें(जि)णंद।
तेजिं जलामल दीपता, कांइं उदेंया[१०] बार द(दि)नंद[११] ॥९॥ भटेवा...

तुंम नांमे सूख पांमिइं, तुंम नांमे जेंयें जेंयेंकार।
श्री नें(न)यवीजयें पंडीत केंहें, इंम भक्तीवीजेंय गुण गायें ॥१०॥ भटेवा...

(३) दया मुनि कृत

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवातीर्थ

कृति परिचय

लघु कदनी कृति छे। तेमां प्रभुने केटलांक विशेषणोथी समरी प्रार्थना कराई छे। जेम के-

वामानंदन, अश्वसेनकुलराया, त्रणभुवनना स्वामी, धरणीधरपूजित, परचापूरण, चंद्रावतीनगरीमां शोभायमान थनारा, नरनारीना मनमोहनारा, जगजंतु तारणहार, जीवजीवनआधार, आदेयनामधारी हे प्रभु आपनुं दर्शन पुण्यथी प्राप्त थाय छे अने दुखदारिद्र दूर टळी जाय छे। आपना ध्यानथी सदा सुखमेवा मळे छे। हे प्रभु भवोभव आपनी सेवा आपजो अने अमारा करोडो मनोवांछित पूर्ण करजो इत्यादि। कृति सरल अने सुगम छे।

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिमां कर्ता तरीके दया नाम मळे छे। ते सिवाय तेओ गृहस्थ हता के साधु, साधु हता तो तेमना गुरु-गच्छ आदि शुं हतुं ते विषे कोई माहिती उपलब्ध थती नथी। सामान्यतया तेओ साधु ज होवा जोईये। कविओमां दयासागर, दयाविमल, दयातिलक, दयाविजय जेवा अनेक नामो इतिहासमां मळे छे। प्रस्तत कृतिना कर्ता विषे विद्वानो संशोधन करे एवी आशा।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक-११४५०६ मां पत्रांक-३आ पर आ कृति लखायेल छे। प्रतिलेखकनी कोई माहिती प्राप्त थती नथी। प्रत सुंदर अने सुवाच्य अक्षरथी लखायेली छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

।। सीता तो रुपें रुडी-ए देसी ।।

पास भटेंवाजी वंदो, एतो वांमारांणीनो नंद हो, पासजी पूजीइं ।
अस्वसेन कुल राया, धरणीधर सेव पाया हो पासजी पूजीइं ॥१॥

त्रीण भुवननो स्वांमी हारें, हूं प्रणमुं सीर नांमी हो पा०... ।
चंद्रावती[१२] नयरीमां सोहें, नर नारीना मनमोहे हो पा०... ॥२॥

परतापुरण पास ए तो, सहूनी पूरें आस हो पा०... ।
जग जंतुर तारणहार, माहरा जीवजीवन आधार हो पा०... ॥३॥

आदेय नाम छें ताहरुं, भुमंडल मे सुखकारु हो पा०... ।
तुझ दरीसण पुन्यें पायो, दूख दोहग[१३] दूर गमायो हो पा०... ॥४॥

भवो भव देज्यो सेवा, तुझ ध्यांन सदा सुख मेवा हो पा०... ।
कहें दया कर जोडी, मुझ देज्यो वंछीत कोडी हो पा०... ॥५॥

।। इति श्री पास भटेवोजी स्तवन ।।

(४) लब्धिविजय मुनि कृत

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवातीर्थ

कृति परिचय

श्री भटेवा पार्श्वजिननी स्तवना करतां कवि लब्धिविजय कहे छे के - ‘ भटेसरपुर तुं रह्यो, गाम नामथी लहीइ रें’ भटेवा नामना गाममां रह्या होवाथी भटेवा तरीके प्रसिद्ध थया छो। अचानक उपद्रव थवाथी तारी मूर्तिने जमीनमां भंडारवामां आवी। स्वप्नमां अधिष्ठायकदेवे सूचन कर्युं के - केरडो अने पीपळना बन्ने वृक्ष साथे जोवा मळे त्यां भटेवा पार्श्वजिननी प्रतिमा छे। संघे तपास करतां ते प्रमाणे मळतां अति उल्लासपूर्वक चाणस्मा गाममां सारा मुहूर्ते जिनमंदिर निर्माण करी प्रतिमा स्थापित करी। अहीं अनेक संघोनुं आगमन, दर्शानार्थीओनी मनोकामनापूर्ति वगेरे वातो कृतिमां जोवा मळे छे। एक विशेष वात ए के त्यांना भटसरीया राजपूतो द्वारा भटेवा पार्श्वनाथने गोत्रदेव तरीके मानवा, तेओ द्वारा केसर कुसुमथी पूजा अने अगरनो धूप उखेववानी वात उल्लेखनीय छे। कर्ताए भटेवा पार्श्वप्रभुने कलियुगमां कल्पतरु, सुरमणी, सुरगवी, सुरवल्लीनी उपमा आपी छे। भटेवा पार्श्वनाथना इतिहास संदर्भे एकाधिक मतांतरो प्राप्त थाय छे। जे संशोधननो विषय छे। जेमके भटसरिया गाम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इडर पासे छे, त्यांथी प्रभुने चाणस्मा लाववामां आव्या, बीजुं ए के मारवाडमां भटेवा गाम छे त्यांथी श्रावको स्थळांतर करी आव्या होय अने प्रतिमा साथे लाव्या होय वगेरे...। तीर्थनी ऐतिहासिक कोई कडी आ कृतिमांथी पण प्राप्त थई शके छे। विशेष संशोधन करवा इच्छता वाचकोने आ कृति उपयोगी बनशे तेवी आशा छे।

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिना कर्ता मुनि लब्धिविजयजी छे। उपलब्ध कृतिमां गुरु परंपरा अने गच्छनी विगत न होवाथी रचयितानी संपूर्ण जानकारी प्राप्त थई नथी। आचार्य श्री कैलासागरसूरि ज्ञानमंदिरना ज्ञानभंडारमां संग्रहित माहितीना अनुसारे लब्धिविजय नामक कर्तानी १३० जेटली कृतिओं प्राप्त थाय छे जेमां लघु-दीर्घ कृतिओ मळीने ८५ जेटली अप्रकाशित जणाय छे। तेना अंतर्गत रास संज्ञक कृति चार खंडमां विभाजित दानशीलतपभावना रासमां रचना वर्ष सं.१६९२ प्राप्त थाय छे। इतिहासमां लब्धिविजय नामे अनेक कविओ थया छे तेमांथी कई कृति क्या लब्धिविजयजीनी छे तथा प्रस्तुत कृतिना कर्ता कोण छे ते संशोधननो विषय छे।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक-११९६१२ मां पत्रांक १३आ-१४अ पर आ स्तवन छे। ९६ पेटाकृति धरावती आ प्रतना अक्षर सुवाच्य छे, पण प्रस्तुत कृतिना अक्षर पाणीथी विवर्ण थवाने कारणे अमुक पाठ अवाच्य छे। प्रतिलेखक पं. उत्तमविजयजी छे। तेमणे सं.१८५४ मां घाटीलानगरे प्रतिलेखननुं कार्य कर्युं छे।

।। देशी - मधुकरनी ।।

श्री भटेवो पासजी, भलइं भेट्यो भगवंत रें।
भीति भाव विभयभंजणो, सुण सनेही संत रे ॥१॥ भटेवो भलइं भेटीउं..

आदि तुम्हारी न जाणीइ, भटेवो किम कहीइ रें।
भटेसरपुर तुं रह्यो, गाम नामथी लहीइ रें ॥२॥ भटेवो०...

भटसरीया[१४] रजपूत तिहां, गोत्रदेव करी जाणइ रे।
केसर कुसुमइ नित पूजइ, अगर धुप बहु आणाइ रे ॥३॥ भटेवो०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिणइं गामइं भय उपनो, अणचिंतित एकवारि रे।
तव सुपना .....कहें, मत को मुझ भंडारइ रे ॥४॥ भटेवो०...
कहेइण न कीधुं जिनतणुं, भंडार्या भली रीतइ रें।
चाणस्मा तुई आपई आव्या, आणी सघलूं[१५] पत्यइ[१६] रे(?) ॥५॥ भटेवो०...
कयर[१७] पीपल[१८] दो एकठां, पास मूरति तेमाहि रे।
सुपनांतर देइ करी कहइ, अद्द(धि)ष्टायक त्याहिं रे ॥६॥ भटेवो०...
संघइं जइ तिहां जोयुं, पास मूरति तिहां लाधइं रे।
अति आणंद नघरें लावइं, शुभ मूरत्य अति साधइं रे ॥७॥ भटेवो०...
संघइ जिनमंदिर कर्युं, तिहां पास भटेवो राजइ रे।
संघ आवइ देस देसना, नित नित उच्छव छाजइ रे ॥८॥ भटेवो०...
जे जे जेम मनी चिंतव्युं, ते तो तइ तस दीधुं रे।
एक मनइं जेणे ध्यायो, चित चिंतित तस सीधुं रे ॥९॥ भटेवो०...
इति उपद्रव आपदा, दुख दारिद्र करइ दूरइं रें।
दुनीआं दोलत्य(त) दय घणी, सुख संपति भरपूरइ रे ॥१०॥ भटेवो०...
तुझ महिमा कांनइं सुण्यो, परतख्य तुं हवइं दीठो रें।
कलिमां[१९] कल्पतरु परइं, दरिसण दीठो मींठो रें ॥११॥ भटेवो०...
सुरमणी[२०] सुरगवी[२१] सुरवल्ली[२२], तिम तुं वंछित दाता रे।
अंतरयामी ईष्ट तुं, शिवसुख दाता भ्राता रे ॥१२॥ भटेवो०...
वरस मास दिन ते भलो, जीवित सफलुं आज रे।
लब्धिविजय कहइं तुं दीठें, पाम्युं त्रिभुवन राज रे ॥१३॥ भटेवो०...

॥ इति भटेसरनो [स्तवन] ॥

(५) लावण्य मुनि कृत

पार्श्वजिन स्तवन-भटेवातीर्थ

कृति परिचय

आ कृतिमां चाणस्मा तीर्थमंडन श्री भटेवा पार्श्वजिनना पंचकल्याणक वर्णवती स्तवना कर्ता लावण्य मुनिए करी छे। सदाय केसर, बरास, धूप, अबील, पुष्पोथी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महेकतुं वातावरण प्रभुभक्तिमां उल्लास प्रेरे छे। चारेबाजु प्रकाश पाथरनार, दुःख हरनार अने दर्शन मात्रथी मनना मनोरथ सफळ करनार एवा चाणस्मामंडन पार्श्वजिनने कवि वंदन करे छे।

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिना अंतिम चरणमां "**लावण्य** कहत होत दरिसन थें" ना आधारे कर्ता लावण्य मुनि छे। प्रख्यात विद्वान तपागच्छीय समयरत्नना शिष्य 'लावण्यसमय' होवानी संभावना छे पण कृतिमां कोई विशेष उल्लेख न होवाथी संशोधनीय छे। बीजी संभावना 'लावण्यविजय' पण होई शके छे। जैन गुर्जर कविओमां मात्र लावण्य नामथी कोई माहिती प्राप्त थती नथी। कर्तानी विशेष विगत माटे विद्वज्जनो संशोधन करे तेवी अपेक्षा।

प्रत परिचय

राधनपुर- हिरसागरजी भंडारमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक-४४ मां पेटांक-११ना क्रमे पार्श्वजिन स्तवना आवेली छे। सं.१८७२ मां लखायेली आ प्रतमां प्रतिलेखकनी माहिती नथी। आ हस्तप्रत गोटका शैलीमां छे। अक्षर सुंदर अने सुवाच्य छे।

॥ राग - सारंग ॥

पद पूजो भटेवा पास के भाव भलें।
भेटत भवियनकुं, बढत तरंग उल्हास के ॥१॥ पद०...

रहे गरकाब सदा परिमलसुं, केसर सरस बरास के।
महमहाट धूप कृष्णागर, कुसुम अबीर[२३] सुवास के ॥२॥ पद०...

जनम दशमी दीक्षा इग्यारस, धन्य दिवस पोस मास के।
चवन ग्यान चैत्र वदि चोथैं, कारन करम खुलास के ॥३॥ पद०...

श्रावन सुदि आठम दिन हूए, थिरवासी शिववास के।
परता[२४] जास प्रगट पुहवी[२५] पुडि[२६], जीपक[२७] भानु प्रकाश के ॥४॥ पद०...

चाणसमामंडन जगत वंदन, खंडन दुःकृत पास के।
लावण्य कहत होत दरिसन थें, सफल मनोरथ दास के ॥५॥ पद०...

॥ इति स्तवः ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दकोश

१. जासुजी-जेने, २. गंजी-जीती, ३. पुलाइजी-नाश पामे, ४. तारी -?, ५. कंलाहें-?, ६. चांचेर्या-संचर्या?, ७. गोठी-पूजारी, ८. चंपक-चंपो, ९. दंमणो-डमरो, १०. उदेंया-उदय पाम्या, ११. दनंद-सूर्य, १२. चंद्रावती-चाणस्मा, १३. दोहग-दुर्भाग्य, १४. भटसरीया-राजपूतनी एक जाती, १५. सघलूं-तमाम?, १६. पत्यइ-?, १७. कयर-एक वृक्ष विशेष, केरडो, १८. पीपल-पीपळो, १९. कलिमां-कलियुगमां, २०. सुरमणी-दिव्य मणी, २१. सुरगवी-कामधेनु, २२ सुरवल्लीदिव्य लता, २३. अबीर-एक प्रकारनुं सुगंधीदार सफेद चूर्ण, अबील, २४. परता-परचो, प्रभाव, २५. पुहवी-पृथ्वी, २६. पुडि-?, २७. जीपक-जीतनार.

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पेज नं २७ पर से)

प्राचीन लिपि में प्रवेश हेतु प्रेरक पूज्य आचार्य श्री अशोकचंद्रसूरीश्वरजी म.सा., संशोधक दृष्टि हेतु पूज्य आचार्य श्री सोमचंद्रसूरि म.सा., ग्रंथ सम्मार्जन करने हेतु अपने गुरु पूज्य आचार्य श्री श्रीचंद्रसूरि म.सा., चित्रादि कार्यों में श्रमदाता पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचंद्रविजयजी आदि को सम्मानपूर्वक स्मरण करते हुए आभार व्यक्त किया है।

ग्रंथ का कागज मजबूत, छपाई सुंदर, साजसज्जा आकर्षक एवं बाइंडिग टीकाऊ है। कथा के अनुरूप चित्रों का संयोजन करने से यह पुस्तक सामान्यजनों के लिए भी आकर्षक एवं उपयोगी है। किसी भी स्तर का वाचक हो उसके हाथ में एक बार यदि यह पुस्तक आ गई तो वह इसे पढे बिना नहीं रह सकता है। मुखपृष्ठ पर अंतिम देशना दाता परमात्मा श्री महावीरस्वामी का चित्र दिया गया है, जो विषयानुकूल ही है।

संपादन के क्षेत्र में पूज्यश्री का यह प्रथम प्रयास होते हुए भी बहुत ही सुंदर एवं सम्यक् पूर्वक संपादन आदि का कार्य किया है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा इनके इस कार्य की सादर अनुमोदना करते हुए यह मंगलकामना करती है कि पूज्यश्री और भी ऐसे अनेक संपादन-लेखन आदि का कार्य करते रहें और श्री संघ उससे लाभान्वित होता रहे।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला-बनारस

(गतांक से आगे..)

पाठशाला का नाम श्रीमद्यशोविजयजी संस्कृत पाठशाला रखकर आज दो साल का अरसा हुवा जब से पठनपाठन का काम चलाया गया। इस दो साल में मुनि संख्या तो वह ही ७ की रही परन्तु श्रावक लोग १३ से ३४ के नम्बरपर पहूंचे। अबतक पाठशाला में संस्कृत और धर्मतत्वकी शिक्षा दी गई है परन्तु अब अंग्रेजी भाषा की शिक्षा दिए जाने का भी विचार किया गया है, शिक्षा के सिवाय श्रावकों के आचारपर पूरी निगरानी रखी जाती है; और सामायक प्रतिक्रमण, देव पूजा नित्यकर्म का पूरा ख्याल रखा जाकर श्रावकाचार में इस पाठशाला के शिष्यों को दृढ किया जाता है। अगर इसही तरहपर अच्छे प्रबन्ध के साथ इस पाठशाला की कार्यवाही चली और कुल जैन समुदाय की इस पाठशाला की तरफ लागणी रही तो बहुत जल्द इस पाठशाला का उम्दा नतीजा देखने में आवेगा। इस पाठशाला के वास्ते एक अच्छे मकान की तजवीज अपने कोन्फरन्स के जनरल सेक्रेटरी मुम्बई निवासी सेठ वीरचन्दजी दीपचंदजी, सी. आई. ई. जे. पी. और सेठ गोकुलभाई मूलचंदजी ने अपने पास से एक मोटी रकम खर्च करके खरीदी है और पाठशाला का खर्च निभाने का फन्ड अपने महसाना निवासी डोसी बैणीचन्द सूरचन्द नें बहूत प्रयास करके इकट्ठा किया है। पाठशाला के मन्दिर तथा पुस्तकालयकी व्यवस्थामें अपने विख्यात सेठ वीरचन्दजी दीपचन्दजी की धर्म• ..... सेठाणी डाई बाई ने अच्छी मदद दी है।

गत २८ मे सन १९०५ के दिन वार्षिक रीपोर्ट पढकर सुनाने का तथा इनाम बांटने का जलसा बड़े ठाठमाठसे किया गया था। जिसपर मुम्बई से सेठ वीरचन्द दीपचन्द, सेठ गोकुलभाई मुलचन्द अपनी धर्म पत्नियों समेत तथा कलकत्तासे राय बहादुर बद्रीदासजी मुकीम अपने पुत्र राजकुमार सिंहजी सहित तथा अन्य सद्गृहस्थ पधारे थे। इनाम की रकमपर नजर डालते हुवे मालूम हो सकता है कि सेठ वीरचन्द दीपचन्द इस पाठशाला की तरफ पूरी लागणी रखते है। पाठशाला के जलसे में बनारस वगरह के विख्यात सद्गृहस्थ पधारे थे और मुनिश्री धर्मविजयजी से मिलकर तथा पाठशाला की कार्यवाही की बहूत प्रशंसा की। हम वीतराग प्रभु से प्रार्थना करते है कि श्रीधर्मविजयजी का प्रयास बहूत जल्दी सफल होवे।

इस पाठशाला के मुतालिक जो पचास पचास रुपयों की तीन स्कोलरशिप का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो बर्षके बास्ते किसी भी यूनिवरसीटी के जैन ग्रेज्यूएटों के वास्ते प्रबन्ध किया गया है बहुत ही उत्तम है। कोन्फरन्स की तरफ से दो स्कोलरशिप तथा सेठ वीरचन्द दीपचन्द, रायबहादुर बदरीदासजी और सेठ गोकलभाई मूलचन्द की तरफ से एक स्कोलरशिप के देने से भाग्यशाली तीन ग्रेज्युएट इस तरहकी उम्दा तालीम पा सकेंगे कि जो देश परदेशमें पहुंचकर जैन धर्मक ध्वजा पताका फरकावैगे। इस बात की बहूतही आवश्यकता थी कि जिसको उक्त महाशयों ने दृढ विचार के साथ सम्पूर्ण किया है।

पाठशाला के अध्यक्षों का विचार हम इस तरफ भी खेंचना जुरूरी समझते है कि जितने लडके इस पाठशाला में पढते है उनकी परीक्षा लेकर जो जो लडके लेकचर अर्थात् उपदेश देने की शक्ति अच्छी रखते हों उनको चुनकर खास उपदेश देने की उत्तम शक्ति पैदा करने की तरफ उनको रूजू करें क्योंकि इस पाठशाला के साथ अपनी समाज की महासभा का बडा भारी तालुक है कि जिसका हाल इस पाठशाला के वास्ते कोन्फरन्सकी तरफ से पचास पचास रुपये की मासिक स्कोलरशिप के अर्पण करने से मालूम हो सकता है। एसे उपदेशकों की अपनी सामाजिक तरकी के वास्ते हमको बहूत आवश्यकता है और हम सबके साथ उस दिनका इन्तजार कर रहे है कि जब हमको इस पाठशालां की तरफसे पाच सात अच्छे उपदेशक तय्यार करके दिये जावें। ग्रज्यूएटों में से यद्यपि अच्छे उपदेशक पैदा होने की आशा है परन्तु उन लोगों की सर्विस हम बड़े कामों के वास्ते रीजर्व रखना चाहते है कि जिसका हाल समय आनेपर मालूम हो सकता है।

हम इस पाठशाला का अपने खरे अन्तःकरण से भला चाहते हुवे और मुनि श्रीधर्मविजयजी आदि अन्य मुनियों को और पाठशाला के विद्यार्थियों को उनके श्रम के लिये धन्यवाद देते हुवे हमारे मुनि मंडल का ध्यान इस पाठशाला की तरफ खेंचना चाहते हैं और उनसे प्रार्थना करते है कि इस पाठशाला को किसी तरहपर अमुक गच्छ या अमुक श्रावक या साधु की न समझकर बलके इसको कुल जैन समुदाय की समझकर इसमें तालीम पाने के लिये जुरूर उत्कंठित होवेंगे और जिस तरहपर श्रावकों के लडकों का नम्बर दो वर्ष में ३४ पर पहुंचा है इसही तरह साधू मुनि राजों का नम्बर भी आयंदा २ वर्ष में ४० या १० तक पहुंचा हुवा देखकर खुश होने की अभिलाषा करते है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

लेखक - गजेन्द्र शाह

ग्रंथ का नाम	:	श्री उत्तराध्ययनसूत्र कथा।
कर्ता	:	तपागच्छीय श्री पद्मसागर गणि।
संपादन एवं-		
गुजराती भावानुवाद	:	पं. सिद्धचन्द्रविजयजी।
अनुवाद आधार	:	उत्त. शिष्यहितावृत्ति, उत्त. सुखबोधावृत्ति, उत्त. लक्ष्मीवल्लभजी की टीका, उत्त. भावविजयजी की टीका।
सम्मार्जक	:	प. पू. आ. श्रीचन्द्रसूरि म.सा.
चित्र संवेदन	:	गणि श्री सुयशचन्द्रविजयजी
चित्रकार	:	आचार्य हरेकृष्णाजी।
प्रकाशक	:	श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमंदिर, सुरत।
आवृत्ति	:	प्रथम।
प्रकाशन वर्ष	:	विक्रम संवत् २०७७।
भाषा	:	संस्कृत एवं गुजराती।
विशेषता	:	उत्तराध्ययनसूत्र की संस्कृत टीका में से ज्ञानवर्द्धक एवं वैराग्यवर्द्धक ९४ जितनी संस्कृत कथाओं का सरल गुजराती अनुवाद तथा कथा से संबंधित रंगीन चित्र।

गुणवर्द्धक, वैराग्यवर्द्धक, मोहछेदक वचनों व सरल सटीक दृष्टांत कथाओं द्वारा बाल-वृद्ध सभी जीवों को भवसागर की भयानकता का क्षणभर में भान (ज्ञान) करा देने वाला, संसार की आसक्तिओं से विरक्त कर जीव को जाज्वल्यमान वैराग्य की ओर प्रेरित करने वाला आगम श्री उत्तराध्ययनसूत्र आज पू. साधु-साध्वीजी भगवंतों के अध्ययन व स्वाध्याय का परम आधार बना हुआ है। भव्य जीवों के कल्याण हेतु पूज्य महात्माओं द्वारा इसका व्याख्यानों में भी भरपूर उपयोग किया जाता है।

यह आगम विद्वानों के लिए तो उपयोगी है ही साथ-साथ सामान्य साधकों का मार्ग भी सरल बना देने में सक्षम है। इस आगम में रही कथाएँ, गहन तात्त्विक विषयों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को समझने में सहयोगीरूप है, तथा बाल जीवों के लिए भी तत्त्व ज्ञान को आसान कर देती है। इसीलिए इस आगम का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। वैसे तो कथानूयोग से संबंधित अनेक आगम व ग्रंथ हैं, उनमें श्री उत्तराध्ययनसूत्र श्रेष्ठतम है।

उत्तराध्ययनसूत्र पर कई टीकाएँ रची गई हैं उनमें से वि. सं. ११वी सदी में हुए वादीवेताल शांतिसूरि रचित शिष्यहिता टीका प्रथम है। इस टीका की विशेषता है कि इसकी रचना में प्राकृत कथाओं व उद्धरणों को बहुलता से प्रयोग किया गया है, इसीलिए इस टीका का दूसरा नाम पाईय टीका भी है। इसे उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति के नाम से भी जाना जाता है। यह टीका मूलसूत्र व निर्यूक्ति दोनों के आधार पर बनी हुई है। इसी टीकान्तर्गत रही कथाओं के आधार पर श्री पद्मसागरजी गणि ने वि. सं. १६५७ में पीपाड ग्राम में संस्कृत कथा की रचना की है। प्रस्तुत ग्रंथ में इन कथाओं से संबंधित प्रसंगों के सुंदर रंगीन चित्रों को भी प्रकाशित किया गया है।

संपादकश्री ने उत्तराध्ययनसूत्र कथा की दो पुस्तकों का संपादन किया है, उनमें से प्रथम पुस्तक में पद्मसागर गणि रचित संस्कृत कथा को स्थान दिया है व दूसरे में संस्कृत कथाओं का गुजराती अनुवाद जिसे पूज्य आचार्य श्री सोमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से सिद्धचंद्रविजयजी ने किया है। कथाओं के अनुवाद में उत्तराध्ययनसूत्र की शांतिसूरि रचित सुखबोधा टीका, लक्ष्मीवल्लभ रचित कल्पद्रुमकलिका टीका व भावविजयजी की टीका का आधार लिया गया है।

दोनों पुस्तकों में कथा से संबंधित रंगीन चित्र दिये गये हैं, जो वाचकों के लिए अति उपयोगी है। कथाओं के साथ-साथ उनसे संबंधित मूल गाथाओं को भी प्रकाशित किया गया है। दोनों पुस्तकें संस्कृत के अभ्यासी व कथारसिकों के लिए तो उपयोगी है ही साथ ही बोधाभिलाषी वाचकों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

विमलसागरजी के शिष्य पद्मसागरजी गणि की विद्वता उनकी कृतियों से झलकती है, वे अल्पपरिचित ऐतिहासिक महापुरुष थे। उनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं व विशेषताओं का परिचय इस ग्रंथ के पुरोवचन में संपादकश्री ने बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। कथानुयोग की विशेषता बतालाते हुए पूज्यश्री ने कितनी प्रकार की कथाएँ होती हैं इस संबंध में भी अनेक उदाहरणों के साथ विवरण उपस्थित किया है। पूज्यश्री ने संपादन में सहयोगी बनने वाले सभी पूज्य महात्माओं एवं अन्य विद्वानों का सादर स्मरण करते हुए योग्य आभार व्यक्त किया है।

(अनुसंधान पेज नं २३ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

तपागच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा एवं राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि की पावन निश्रा में कोबा मध्ये श्री अजितकुमार का भव्यातिभव्य दीक्षा महोत्सव सानंद संपन्न

बरोडा निवासी श्रीमती जेनाबेन सोमजीभाई के सुपुत्र मुमुक्षुरत्न श्री अजितकुमार ने मात्र 11 वर्ष की लघुवये राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के पावन सान्निध्य में पिछले दो वर्ष से धार्मिक अध्ययन किया, गुरुकुलवास में रहकर साधुचर्या के जीवन को नजदीकी से देखा और वैराग्यवासित हुए। संसार से विरक्त होकर साधुजीवन के परमानंद को प्राप्त करने की तत्परता गुरुदेव के सामने प्रस्तुत की। गुरुदेव ने उनकी भावना एवं योग्यता को अच्छे से परखकर अनुमति प्रदान की।

परिवारजनों एवं गुरुजनों की सहर्ष अनुमति एवं आशीष प्राप्त होने पर उनकी भव्य दीक्षा का आयोजन बरोडा निवासी श्रीमती जेनाबेन सोमजीभाई जैन एवं श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र परिवार द्वारा कोबा में दि. 23/01/2022 के दिन त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ हुआ।

इस महोत्सव में तपागच्छाधिपति पूज्य आ. श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा, राष्ट्रसंत पूज्य आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, पूज्य आ. श्री उदयकीर्तिसागरसूरि, पूज्य आ. श्री अरूणोदयसागरसूरि, पूज्य आ. श्री हेमचंद्रसागरसूरि म.सा., पूज्य आ. श्री विवेकसागरसूरि म.सा., पूज्य गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी म.सा., पूज्य गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. आदि 45 श्रमण - श्रमणी भगवंतो का स्वर्णिम सान्निध्य प्राप्त हुआ।

विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण सरकारश्री के निर्देशों का पालन करते हुए त्रिदिवसीय महोत्सव में दि. 21-01-2022 के दिन विशिष्ट अष्टप्रकारी महापूजा, मूलनायक परमात्मा के समक्ष विशिष्ट शुद्ध द्रव्यों तथा संगीतमय पुष्पवृष्टि सह भव्य अनुष्ठान, केसरीया वर्धापन, छाबविधि, वस्त्ररंग, केसर, महेंदी रस्म, श्राविकाओं द्वारा मंगल गीत गान तथा संध्याभक्ति कार्यक्रम रहा।

दि. 22-01-2022 के दिन दीक्षार्थी की भव्य वर्षीदानयात्रा(वरघोडा) की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गई, जिसमें शहनाई मंगलवाद्यों के साथ दीक्षार्थी को हाथी पर आरूढ कर अश्व-रथ-शासन ध्वज-पताका व विविध मंगलवाद्यों, बेन्ड के साथ श्रावक-श्राविका, बहार गाँव से पधारें गुरुभक्त-श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों की विशाल संख्या के साथ शानदार यात्रा निकाली गई। इस उपलक्ष्य में अनुकंपा वर्षीदान किया गया।

सायंकाल में भव्यातिभव्य महाआरती आयोजन किया गया। जिसमें सुवर्ण व रत्नजड़ित अंगरचना की गई, जिनालय दीपक की रोशनी से देदीप्यमान हो रहा था। भक्ति के पश्चात् मुमुक्षुरत्न के करकमलों से आरती की गई तथा मुमुक्षु के विदाय समारोह के उपलक्ष्य में मेंबई के संगीतकार भाविकभाई शाह एवं प्रतीकभाई शाह के द्वारा सुंदर प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया।

अभिनंदन तथा विजय समारोह, अन्य तीन मुमुक्षु बहनों के सन्मान तथा अभिनंदन का कार्यक्रम, संयम संवेदना, तथा भक्ति प्रस्तुति आदि कार्यक्रम बहुत ही अच्छे से किया गया। श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, ट्रस्ट की ओर से दीक्षार्थी को बहुमान पत्र अर्पण किया गया।

दि. 23-01-2022 को सुबह 8.45 बजे पूज्य गुरुभगवंतों, साध्वीजी भगवंतों, श्रावक-श्राविका आदि चतुर्विधसंघ के समक्ष दीक्षाविधि का प्रारंभ हुआ। जिसमें विजयतिलक, रजोहरण प्रदान, उपकरण प्रदान, नामकरण तथा हितशिक्षा प्रदान स्वरूप भव्य दीक्षा का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

मुमुक्षु श्री अजितकुमार का दीक्षा बाद नामकरण मुनि श्री रत्नपद्मसागरजी रखा गया और पू. गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. के शिष्य के रूप में उद्घोषित किया गया। साधु के परिवेष में बालमुनि श्री रत्नपद्मसागरजी का मुखकमल शोभायमान हो रहा था, जिन्हें देखकर लोगों का मन प्रफुल्लित हो रहा था।

इस पावन अवसर पर शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टीवर्य श्रीपालभाई शाह, आर. एन. शाह, जैन संघ के अग्रणी श्री कल्पेशभाई वी. शाह, श्री कल्पेशभाई जे. शाह, श्री जयेशभाई शाह (नमन)मुंबई, दिल्ली कलकत्ता, बेंगलोर, चैन्नई-मद्रास आदि राजनगरों के विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति रही, तथा भारतभर से पधारे विशिष्ट महानुभाव एवं श्रद्धालु गुरुभक्तों ने भाग लिया। दीक्षान्ते साधर्मिक वात्सल्य किया गया। इस कार्यक्रम के पश्चात् सभी महानुभावों के लिए साधर्मिक भक्ति का आयोजन किया गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि की पावन निश्रा में प्रेरणातीर्थ अहमदाबाद मध्ये श्री शत्रुंजय महातीर्थ के लिए आए गुजरात हाईकोर्ट के जजमेन्ट को ले कर श्रीसंघ में खडे किए गए प्रश्नों के समाधान हेतु समग्र जैन श्वे. मू. तपागच्छ श्री महासंघ-अहमदाबाद आदि द्वारा आयोजित की गई महासभा

श्री शत्रुंजय गिरिराज पर आए हुए नीलकंठ महादेव मंदिर संबंधी (पिटिशन नं. १८०/२०१७) का फैसला दि. 19/08/2021 के दिन गुजरात हाईकोर्ट द्वारा दिया गया। इस फैसले को लेकर कतिपय वर्ग द्वारा कुछेक निवेदन दिये गये तथा प्रस्तुत जजमेन्ट को लेकर शेठ श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी की एफिडेविट के संदर्भ में कुछेक प्रश्न सोश्यल मिडीया में वायरल किये गए थे, जिससे श्री जैन संघ में भ्रम व असमंजसता पैदा हुई थी। इन प्रश्नों की स्पष्टता हेतु अहमदाबाद, पालीताणा, भावनगर के श्री संघों तथा शासन समर्पित महत्वपूर्ण संस्थाओं ने साथ मिलकर दि. 30/01/2022 मेरुत्रयोदशी रविवार के दिन प्रेरणा तीर्थ अहमदाबाद में एक सभा का आयोजन किया।

इस सभा में तपागच्छ प्रवर समिति द्वारा नियुक्त शत्रुंजय तीर्थरक्षा श्रमण समिति के वरीष्ठ प. पू. आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, उनके शिष्य तीर्थरक्षाकार्यसक्रिय प.पू. आचार्यदेव श्री अजयसागरसूरि म.सा., प. पू. आचार्यदेव श्री उदयवल्लभसूरि म.सा., प. पू. आ. श्री हृदयवल्लभसूरि म.सा., पू. आ. श्री मतिचंद्रसागरसूरि म.सा., प. पू. मुनिराज श्री वासुपूज्यसागरजी म.सा. आदि विविध समुदाय के साधु-साध्वीजी भगवंतो की शुभनिश्रा प्राप्त हुई। इसमें कई नगरों के संघों के अग्रणी व भाविक श्रावक-श्राविकागण उपस्थित रहे थे।

आचार्य भगवंत श्री अजयसागरसूरि म.सा ने पू. आ. श्री युगभूषणसूरि के तीन निवेदनों में से उद्धृत १६ प्रश्नों को सभा समक्ष रखा व एक-एक के उत्तर प्रमाणों सह सटीकरूप से प्रस्तुत किये, उसमें पू.आ. श्री उदयवल्लभसूरि म.सा., मुनि श्री वासुपूज्यसागरजी म.सा., गुजरात हाईकोर्ट के निवृत्त जज साहब श्री सुबोधभाई शाह ने एवं एडवोकेटों में श्री निमिषभाई कापडिया, श्री नीरवभाई संघवी (ये दोनों पिछले कई वर्षों से तीर्थरक्षा, जीवदया के लिए अविरत कार्य कर रहे हैं) ने किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रहादि मुक्त सबको समझ में आ जाए उस प्रकार से सरल भाषा में कानूनी तथा ऐतिहासिक, शास्त्रीय एवं कोर्ट के रेकर्ड के आधार पर यथार्थ जानकारी दी। राष्ट्रसंतश्री भी बीच-बीच में आवश्यक हो वहाँ समयोचित समझ दे रहे थे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६५ जितनी पीपीटी स्लाईड्स के आधार से गरुभगवंतों, जज साहब व वकीलों द्वारा दी गई मुद्दाबद्ध जानकारी से उपस्थित सभी परम संतुष्ट हुए।

इस कार्यक्रम के माध्यम से सब को यह भी जानकारी मिली कि प. पू. आचार्य भगवंत श्री अजयसागरसूरि म.सा. जो शत्रुंजय तीर्थरक्षा श्रमण समिति के वरीष्ठ आचार्य भगवंतों के आदेशानुसार पिछले साढ़े चार वर्षों से दिन-रात एक करके शेठ श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के साथ मिलकर गिरिराज की रक्षा के लिए स्वयं व उनकी टीम, किस प्रकार खून-पानी व दिन-रात एक करके अनेक प्रकार की कानूनी आदि कार्यवाहीओं हेतु मेहनत कर रहे है। सब की निष्ठा और तीर्थ भक्ति पर सभी मंत्रमुग्ध बने।

चर्चा निष्पक्ष एवं निःसंकोच हो इसलिए शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टी गण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं रहे थे, लेकिन बाद में सभा की इच्छा को मानते हुए गुरु भगवंतो ने कहा कि उनकी हाजरी से निष्पक्षता पर कोई असर पडने वाली नहीं है, फिर गुरु भगवंतो के निर्देश से अंत में पेढी के ३ ट्रस्टीश्री पधारे, जिन्हें समस्त सभा ने तालीओं के नाद से सहर्ष बधाई दी थी एवं उनके वक्तव्य को भी सभा ने पूरी गंभीरता से सुना था।

परम पूज्य राष्ट्रसंत श्री आचार्यदेव पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमणवृंद की पावन निश्रा में साणंद नगरस्थ श्री पद्मप्रभस्वामी जिनालय की 100वीं सालगिराह निमित्त पंचाह्निका महोत्सव संपन्न

परम पूज्य राष्ट्रसंत श्री आचार्यदेव पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा तथा पूज्यश्री के प्रशिष्यरत्न प.पू. गणिवर्य श्री नयपद्मसागर म.सा. की प्रेरणा से श्री पद्मप्रभस्वामी जिनालय, साणंद में पंचाह्निका महोत्सव संपन्न हुआ।

दि. 1 फरवरी 2022 को सुबह 9.15 बजे प.पू. राष्ट्रसंतश्री आदि श्रमणवृंद के साथ हर्षोल्लासपूर्वक सकल संघ द्वारा भव्य प्रवेशयात्रा की गई। उसके बाद द्वारोद्घाटन कार्यक्रम तथा परमात्मा की अढार अभिषेक विधि की गई। दि. 2 फरवरी को सुबह 6.50 बजे समुह स्नात्र, 9.15 बजे प.पू. गुरुभगवंतो का प्रवचन तथा दोपहर 12.39 बजे सिद्धचक्र महापूजन आयोजन किया गया। दि. 3 फरवरी को प. पू. गुरुभगवंतों का प्रवचन, देरासर तथा उपाश्रय के कर्मचारियों का बहुमान, इस पावन अवसर पर साणंद के पनोता पुत्र राष्ट्रसंतश्री के परम शिष्य नमस्कार महामंत्र आराधक जाप-मग्न प.पू. आ. श्री अमृतसागरसूरीश्वरजी के नमस्कार महामंत्र की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशिष्ट आराधना स्वरूप 'नवकार महापूजन विधि' शांताबेन दलसुखभाई गोविंदजी महेता लाभार्थी परिवार द्वारा की गई। सायंकाल 7 बजे संगीतकार द्वारा प्रभुभक्ति की गई। दि. 4 फरवरी को प. पू. गुरुभगवंतो का प्रवचन तथा ऋषिमंडल महापूजन का आयोजन किया गया।

दि. 5 फरवरी को समुह स्नात्र, पक्षाल पूजा तथा प. पू. गुरुभगवंतों का मांगलिक प्रवचन, दोपहर 11.12 बजें श्री पद्मप्रभस्वामी का 100वां ध्वजारोहण, श्री पंचकल्याणक पूजा तथा सामूहिक आयंबिल का आयोजन किया गया, जिसमें 465 से अधिक आयंबिल हुए।

आचार्यपद प्रदान की अग्रिम उद्घोषणा

पंचाह्निका महोत्सव अंतर्गत वसंत पंचमी के पावन अवसर पर प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, पुण्य पद प्रदायक, राष्ट्रसंत प.पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में उनके शिष्यरत्न आजीवन गुरुचरणजीवी, गुरुकृपाप्राप्त गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. तथा पूज्यश्री के प्रशिष्यरत्न JIO-JITO के संस्थापक, प्रखर प्रवचनकार गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी म.सा. का आचार्यपद प्रदान होगा। इस पद प्रदान का कार्यक्रम वर्ष-2023 में शुभावसर पर समायोजित किया जायेगा।

प.पू. राष्ट्रसंतश्री के आशीर्वाद ग्रहण हेतु गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्रभाई पटेल का आगमन

दि.8 फरवरी 2022 को गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्र पटेल शीलज-अहमदाबाद में श्री महावीरज जैन आराधना केन्द्र के ट्रस्टीवर्य श्री डिम्पलभाई मारफतियाजी के बंगले पर आकर प.पू. राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की मुलाकात लेकर आशीर्वाद ग्रहण किये।

प्रभावक शिरोमणी राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी आदि की मंगल निश्रा में सुवर्ण प्रतिमा निर्माण का मंगलकारी विधान

अप्रतिम प्रतिभासंपन्न राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, प.पू.आ. श्री नंदीघोषसूरीश्वरजी म.सा. तथा साध्वी श्री मुक्तिरत्नाश्रीजी म.सा, साध्वी श्री आनंदपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दि. 10 फरवरी 2022 को सेटेलाईट-सोमेश्वर श्री संघ मध्ये सुवर्ण प्रतिमा निर्माण का मंगलकारी विधान प्रारंभ किया गया। इस मंगलकारी प्रतिमा निर्माण के पूर्व सुबह 10.30 बजे शहनाई-ढोल मंगलवाद्यो के मांगलिक शुकन के साथ सकल संघ को प.पू. गुरुभगवंतों ने मूर्ति निर्माण का महत्त्व दर्शाते हुए आशीर्वचन दिया। इस मूर्तिविधान की बोलीयाँ आदि में श्रद्धालु भक्तों ने बहुत ही उत्सुकता से भाग लिया।

साबरमती में प.पू. राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमणवृंद का पुनित पदार्पण

दि. 11 फरवरी 2020 को प.पू. राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा का श्रमणवृंद के साथ अप्रतिम उल्लास के साथ वलाद निवासी हीरालाल जेसींगभाई शाह परिवार के आंगण में पावन पदार्पण किया गया। प्रातः 9 बजे प.पू. राष्ट्रसंतश्री का हृदयस्पर्शी प्रवचन हुआ। प्रवचन के बाद लाभार्थी परिवार ने गुरुपूजन कंबली अर्पण कर संघपूजन का लाभ लिया। इस अवसर पर पूज्य सौम्यरत्नविजयजी तथा नवरत्नसागरसूरि म.सा. का शिष्य परिवार का भी आगमन हुआ।

कैलासवाटिका कोबाधाम में नूतन जिनबिंब प्रवेश

महा शुक्ला १३, सोमवार, दि. 14/02/2022 के दिन सुबह ९ बजे श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा के समीपवर्ती नभोई के **'श्री कैलास आराधना केन्द्र'** में नवनीर्मित जिनालय के गर्भगृह में श्री मुनिसुव्रतस्वामी तथा अन्य जिनप्रतिमाओं का मंगल प्रवेश राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के मंगल आशिर्वाद से प. पू. व्यवहारकुशल गणिवर्य श्री ज्ञानसागरजी म.सा. के शिष्यरत्न प. पू. आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरि म.सा. आदि की पावन निश्रा में सानंद संपन्न हुआ। दोपरह श्री वर्धमान शक्रस्तव अखंड अभिषेक धारा तथा साम को संध्या भक्ति आरती का आयोजन हुआ।

श्री कोबा तीर्थ का 35वाँ ध्वजारोहण सानंद संपन्न

महा शुक्ल १४, दि.15/02/2022 के दिन पू. आ. श्री हेमचंद्रसागरसूरि म.सा. तथा भुवनभानुसूरि समुदाय के पू. पंन्यास प्रवर श्री दिव्यरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अनेक विशेष महानुभावों व अन्य भाविक भक्तों की उपस्थिति में श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा तीर्थ का ३५वाँ ध्वजारोहण सानंद संपन्न हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपागच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा एवं राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि की पावन निश्रा में श्री मधुपुरी(महुडी) तीर्थ मध्ये- श्री पद्मप्रभस्वामी जिनप्रासादे सिद्धचक्र महापूजन सहित त्रिदिवसीय श्री जिनेन्द्रभक्ति आदि महोत्सव

मुमुक्षु कशीषबहन, मुमुक्षु मनीषाबहन, मुमुक्षु अस्मिताबहन की भव्यातिभव्य दीक्षा का त्रिदिवसीय महोत्सव अन्तर्गत महुडी मध्ये दि. 15 फरवरी 2022 को सुबह 10 बजे श्री सिद्धचक्र महापूजन प.पू. तत्वगुणाश्रीजी म.सा. के सदुपदेश से गवाडा निवासी संगीताबेन अमीषकुमार सूर्यकान्तभाई शाह परिवार द्वारा किया जायेगा। दोपहर 2.30 को दीक्षा का मामेरा, महेंदी रस्म, विरतिधर वस्त्ररंग, वर्धापन किया जायेगा। रात को 8.30 बजे संगीत भक्ति की जायेगी।

दि. 16 फरवरी 2022 को सुबह 8.30 बजे तपाराधिका प.पू. साध्वीजी भगवंत श्री संयमरत्नाश्रीजी म.सा. की वर्धमानतप की 100वी ओली का पारणा होगा। जिसके लाभार्थी सरदारपुर निवासी मातृश्री सुभद्राबेन हसमुखलाल केशवलाल शाह परिवार द्वारा किया जायेगा। सुबह 10 बजे प्रीतिदान शोभायात्रा (वरसीदान वरघोडा), 12.00 बजे संयमी के हाथों से संयम प्रसादी (बेठुं वरसीदान), दोपहर 2.30 बजे तप की सांजी, लाभार्थी- विजापुर निवासी चंद्राबेन लालभाई पाडेचिया द्वारा किया जायेगा। दोपहर 4.30 को अणाहारीपद के यात्री (मुमुक्षु) का अंतिम वायणा, रात को 8 बजे महापूजा (संसार की अंतिम रात्री- अंतिम विदाय) होगी।

दि. 17 फरवरी 2022 को शुभावसरे दीक्षा विधि का प्रारंभ किया जायेगा। दोपहर 3 बजे श्री पंचकल्याणक पूजा की जायेगी। जिसके लाभार्थी सरदारपुर निवासी मातृश्री सुभद्राबेन मफतलाल शाह परिवार रहेंगे।

परम श्रद्धेय महान शासनप्रभावक प.पू. राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिजी आदि की पावन निश्रा में छ'री पालित संघयात्रा का पावन अवसर

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, पू. आ. श्री विवेकसागरसूरि म.सा., पू. आ. श्री अजयसागरसूरि म.सा., गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. आदि श्रमणवृंद की पावन निश्रा में पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी महाराज साहेब के निर्देशानुसार श्री ऋषभदेव श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ द्वारा मीराम्बिका-नारणपुरा, अहमदाबाद से सर्वप्रथम बार कलिकाल कल्पद्रुम प्रगटप्रभावी पुरुषादानीय श्री शंखेश्वरजी महातीर्थ की छ'री पालित पदयात्रा संघ का आयोजन किया जायेगा।

(अनुसंधान पेज नं. ६ पर)

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि की पावन निश्रा में प्रेरणातीर्थ अहमदाबाद मध्ये श्रीशत्रुंजय महातीर्थ की कानूनी कार्यवाही प्रश्नों के समाधान हेतु आयोजित श्वे. मू. जैन महासंघ के अग्रणीओं की सभा

सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी. साथ में बिराजमान आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी, आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी, आचार्य श्री मतिचंद्रसागरसूरिजी, आचार्य श्री उदयवल्लभसूरिजी, आचार्य श्री हृदयवल्लभसूरिजी

पधारे हुए गुजरात हाईकोर्ट के माननीय निवृत्त जज साहेबश्री एस. जे. शाह, तीर्थ रक्षा तथा जीवदया के कार्य के लिए समर्पित अग्रणी एडवोकेट श्री निमीषभाई कापडीया तथा श्री नीरवभाई संघवी

सभा के विशेष आग्रह पर पधारे हुए शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टीगण श्री श्रीपालभाई, श्री सचीनभाई एवं श्री कल्पेशभाई वी. शाह

प्रश्नो के समाधान को प्राप्त करने के लिए पधारे हुए समग्र अहमदाबाद श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ महा संघ के प्रमुख श्री प्रवीणभाई आत्माराम तथा अहमदाबाद, मुंबई, पालीताणा तथा भावनगर आदि संघो से बडी संख्या में पधारे हुए अग्रणीगण.

सेटेलाइट-सोमेश्वर अहमदाबाद में राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में सुवर्ण प्रतिमा निर्माण विधान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Registered Under RNI Regestration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Koba so, and on 20th data
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2024.

साणंद नगरे राष्ट्रसंत प. पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा
आदि की पावन निश्रा में जिनालय की 100वीं वर्षगांठ के कार्यक्रम की एक झलक

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only